PEN2PRINT®

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695

Volume 03 Issue 07

June 2017

"श्रीमद्‌भगवत्‌गीता का एक ऐतिहासिक मूल्य"

डॉ० दलजीत सिंह प्राध्यापक
रा० व० मा० वि०, जीन्द (हरियाणा)

भगवान अनन्त है – उनका सर्वस्व ही अनन्त है, तब भगवान केशव जी महाराज के मुखारविन्द से निकली हुई गीता के भावों का अन्त भला कैसे हो सकता है अर्थात् कभी भी नहीं हो सकता है। जब तक आकाश में सूर्य चन्द्र है पृथ्वी पर नदियां और पर्वत विद्यमान है तब तक हर घर में गीता का पठन–पाठन सदैव होता रहेगा। वास्तव में श्रीमद्‌भगवत्‌गीता का माहत्मय वाणी द्वारा वर्णन करने के लिए या लेखनी द्वारा लिखने के लिए किसी में भी सामर्थ्य नहीं है चाहे वे कितने भी बड़े ऋर्षि-मुनि, सन्त महात्मा क्यों न हो और उनकी वाणी कितनी भी श्रेष्ठ क्यों न हो, पर वह भगवान की दिव्यातिदिव्य वाणी 'गीता' की बराबरी नहीं कर सकती।

श्रीमद्‌भगवत्‌गीता का ऐतिहासिक महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि गीता हमारे ऐतिहासिक और वैदिक धर्म ग्रन्थ उपनिषद् और ब्रहमसुत्र दोनों का तात्पर्य अभिव्यक्त कर रही हैं।

गीता उपनिषदों का सार तत्व है परन्तु देखा जायें तो गाीता की बातें उपनिषदों से भी विशेष है क्योंकि कारण की अपेक्षा कार्य में विशेष गुण हमेशा रहता है। जैसे - आकाश में केवल एक गुण 'शब्द' है पर उसके कार्य वायु में दो गुण 'शब्द और स्पर्श' हैं।

गीता वेदों से भी श्रेष्ठ है क्योंकि वेद तो भगवान के निःश्वास है लेकिन गीता भगवान की वाणी है। निःश्वास तो स्वाभाविक होते है पर गीता भगवान् ने योग में स्थित होकर कही है। योग में स्थित होकर कहने का तात्पर्य– सुनने वालो – पढ़ने वालो – मनन करने वालो का वर्तमान समय से लेकर भविष्य तक उनका हित किसमें होगा ? – साधको के हित को ध्यान में रखकर गीता भगवान के मुखारविन्द से निकला हुआ परमात्मत्तत्व है। भगवान केशव जी ने स्वयं कहा है :–

"न शक्यं तन्मया भूयस्तथा वक्तुमशेषतः"

परम हि ब्रह्म कथितं योगयुक्तेन तन्मया। (महाभारत,

आश्व० 16, 12-13) उक्त श्लोक से यह सिद्ध होता है कि गीता एक रहस्यमय ग्रन्थ हैं। यदि हम एकाग्रचित होकर श्रद्धा-भक्ति युक्त होकर विचार करे तो इसके प्रत्येक पद में परम रहस्य भरा हुआ प्रत्यक्ष प्रतीत होता है। भगवान के गुण-प्रभाव और मर्म का वर्णन जिस प्रकार इस गीता शास्त्र में किया गया है वैसा संसार के अन्य ग्रन्थों में मिलना दुर्लभ है क्योंकि प्रायः ग्रन्थों में सांसारिक विषय किसी न किसी रूप में मिलता ही है किन्तु भगवान ने "श्रीमद्भगवत्गीता" रूप एक ऐसा अनुपमेय शास्त्र हमें दिया है, जिसमें एक पद भी सदुपदेश से खाली नहीं है। इसी अनुभव के आधार पर श्रीवेदव्यास जी ने महाभारत में गीता का वर्णन इस प्रकार से किया हैः–

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।

या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।

'श्रीमद्भगवत्गीता' का महत्व इसलिए अधिक क्योंकि यह धार्मिक ग्रन्थ सभी का मार्गदर्शन करता है चाहे वह किसी भी वर्ण, किसी भी आश्रम किसी भी देश-समाज-सम्प्रदाय-मत का क्यों न हो इसमें सभी का वास्तविक कल्याण सन्निहित है। प्रत्येक दर्शन के अलग-अलग अधिकारी हैं परन्तु गीता को यह विलक्षणता है कि अपना उद्धार चाहने वाले सब के सब इसके पूर्ण रूप से अधिकारी है। साधक के सामने किसी भी समय, कोई भी, कैसी भी परिस्थिति क्यों ना आ जाये वह अपना कल्याण हेतु गीता का सदुपयोग करे। सदुपयोग का भाव हैः–

दुःखदायी परिस्थिति आने पर सुख की इच्छा का त्याग करना और सुखदायी परिस्थिति आने पर सुखभोग की इच्छा का त्याग तथा 'वह इच्छा बनी रहे' इस इच्छा का पूर्ण रूपेण त्याग करना और अपने को दूसरों की सेवा में लगाना - इस प्रकार के सदुपयोग से मानव दुःखदायी और सुखदायी दोनों परिस्थितियों से ऊँचा उठ जाता है तथा उसी का कल्याण होता है यह गीता का मुख्य तथा प्रारम्भिक लक्ष्य हैं। गीता में योग को महत्वपूर्ण विषय मानकर विस्तृत रूप से चित्रित किया गया है। भगवान केशव जी ने योग के विचित्र अर्थो के तीन विभाग किये हैंः–

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

1. समत्वं योग उच्यते - समरूप परमपिता परमात्मा के साथ नित्य सम्बन्ध।

2. 'युज समाधौ' - चित्त की स्थिरता अथवा समाधि में स्थित रहना।

3. 'युज संयमने' - संयमन, सामर्थ्य अथवा प्रभाव।

गीता का 'योग' शब्द बड़ा व्यापक और गम्भीरार्थक हैं।

पातंजलयोग दर्शन में चितवृतियों के निरोध को योग नाम से कहा गया हैं।

जैसे - "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" (1/2)

गीता में वृत्तियों का निरोध होने पर निर्विकल्प अवस्था होती हैं। समता में स्थिति होने पर 'निर्विकल्प बोध' होता – जिसका तात्पर्य सम्पूर्ण अवस्थाओं का प्रकाशक हैं। समता अथवा नित्य योग का अनुभव कराने के लिए गीता में तीन योग मार्गो का वर्णन किया गया हैंः–

1. कर्म योग 2. ज्ञान योग 3. भक्ति योग।

स्थूल-सुक्ष्म और कारण – इन तीनों शरीरो का भौतिक संसार जिसमें मानव-स्वजीवन यापन कर रहा है – उसके साथ अभिन्न सम्बन्ध है। ये तीनों शरीर संसार से इसी प्रकार अलग नहीं हो सकते जैसे मानव शरीर से उसके अंग - हाथ - पैर - सिर - आंख - नाक आदि अलग होने पर नष्ट हो जायेगे क्योंकि शरीर से अलग होने पर अंगो का कोई महत्व नहीं है। श्रीमद्भगवत् गीता का यदि मूल्य आकने लगे तो हमारे अन्दर इतनी सामर्थ्य नहीं हैं, लेकिन यदि उसके वर्ण्य-विषय योग की चर्चा शुरू की है तो उसे यहाँ स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि तीनों योग मार्गो को अपनाने या उस पर चलने के लिए आवश्यक बातों को भी ध्यान में रखना होगा जिन्हें श्री केशव जी ने मानव मात्र के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण माना है। जो इस प्रकार हैः–

1. कर्म योगः– तीनों को दूसरे व्यक्तियों की सेवा में लगाना कर्मयोग है।

2. ज्ञान योगः– स्वयं इनसे अलग होकर अपने स्वरूप में स्थित हो जाना ज्ञान योग है।

3. भक्ति योगः– स्वयं भगवान के समर्पित हो जाये - भक्ति योग कहलाता है।

योगी राज श्री कृष्ण योग के सम्बन्ध में ज्ञान - कर्म और भक्ति का समन्वय नहीं करते अपितु सम्पूर्ण मानव-जीवन के योग में बदलने की शिक्षा देते हैं। अतः स्पष्ट है कि मानव के आहार-विहार, शयन-जागरण, यज्ञ-तपस्या, भोग-त्याग, हर्ष-विषाद, युद्ध-विग्रह जितने भी कार्य है इन सबको गीता ने ही योग-युक्त बनाकर नया रूप दिया है। यह विश्व जीवन का योग है इसको एकांगी योग नहीं कहा जा सकता। गीता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक छोटा सा साधारण कार्य भी यदि योग में स्थित होकर किया जायें तो वह शुभ गति और कल्याण का कारण बन जाता है, वह योग कितना महान और पवित्र है। जिस योगत्रय की निर्मल धारा में स्नान करके मानव के पाप पुज धुल जाया करते है।

4. प्रत्येक अध्याय के अन्त में यही भाव है–

‘इति श्रीमद्भगवत् गीतासूपनिषत्सु योग शस्त्रे’

इसमें सभी भावों का योग हैं – चेतन के साथ अचेतन का योग है, व्यष्टि के साथ समष्टि का योग है, पुरुष के साथ पुरूषोत्तम का योग है। योग सुत्र ज्ञान–कर्म और भक्ति को एक सुत्र में पिरोकर उस वैज्यन्ती माला को तैयार करता है जिसे श्री कृष्णभगवान ने अपने कण्ठ में धारण किया गीता – उसी का साकार रूप है। यह असीम – अनन्त और अद्वितीय योग शास्त्र जिसके हाथ में है वह मनुष्य पराधीन भला क्यों रहेगा ? गीता रूपी अमृत पीकर विष-पान कौन पीने की इच्छा करेगा अर्थात कोई नहीं। भगवान श्री कृष्ण जी ने जिस योग का उपदेश दिया है वह आत्मा योग है जिसे यह योग प्राप्त हो जाये उसे अच्छे-बुरे, ऊँच-नाच के भेद भाव की कल्पनाएं कभी विचलित नहीं करती है। सुख-दुःख, जन्म-मरण, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी, रात-दिन एक दूसरे पर आधारित है - गीता को ज्ञान प्राप्त करने पर ये द्वन्द्व वैसे ही दूर हो जाते है जैसे जलते हुए चन्दन के वृक्ष को देखकर सर्प दूर भाग जाता है अर्थात् व्यक्ति सच्चे भक्ति योग से हमेशा के लिए जुड़ जाता है – “सोडविकल्पेन् योगेन, युज्यते नात्र संशयः”।

ISSN- 2454-2695

Volume 03 Issue 07

June 2017

गीता का अधिकाधिक महत्व इसलिए है क्योंकि भगवान् केशव जी अपने गीता मन्त्रों के सुरीले स्वरों से जहाँ एक ओर कर्त्तव्य – परायणता का उपदेश देते हैं। वहाँ दूसरी ओर ज्ञान और भक्ति की भागीरथ में स्नान भी कराते हैं। यदि योगी राज के एक हाथ में शंख है तो दूसरे हाथ में सुदर्शन चक्र है। यदि एक हाथ में गदा है तो दूसरे हाथ में नीलकमल है – ठीक यही अद्भुत समन्वय श्री मद्भगवत् गीता में हमें देखने को मिलता है।

अन्त में गीता का मूल्य आंकते हुए यहीं कहा जा सकता है कि भगवान की भक्ति का पहला चरण है – शरणागत, दूसरा शरणागत की रक्षा, शरणागत की जिम्मेदारी और भक्तवत्सलता इन सबको वे अपने अंदर स्वीकार करते है, यथा –

“तेषां नित्याभियुक्तानां, योग क्षेमं वहाम्यहम्”।।

5. श्रीमद्भगवतगीता का उपदेश आज बदलते हुए सामाजिक परिवेश में भी अपने महत्ता को बनाये हुए है इसी कारण तकनीकी एवं ऐतिहासिक और अधिक बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। गीता का सन्देश सभी के लिए अत्यन्त पुरातन योग है। यह ईश्वरीय वाणी है जिसमें सम्पूर्ण जीवन का सार एवं आधार है।

वर्तमानयुग में श्रीमद्भगवतगीता धर्म से ज्यादा जीवन मूल्यों के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर सिर्फ भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी लोगो के जीवन का उद्धार कर रही है निष्काम कर्म का सन्देश आज सम्पूर्ण विश्व में सभी को अपनी ओर खींच कर कर्तव्य परायण और धर्मपरायण बना रहा है – आज विश्व के सभी धर्मो की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक श्रीमद्भगवत्गीता ही है।

आज मनुष्य चाहे वैज्ञानिक युग में जी रहा है उसकी सोच-विचार सभी वैज्ञानिक है परन्तु फिर भी उसके मन में कुछ जिज्ञासा व प्रश्न उत्पन्न होते है जो इस प्रकार हैः–

मै कौन हूँ? यह देह क्या है? इस देह के साथ मेरा क्या सम्बन्ध है? मेरा आदि और अन्त कैसे होगा? देह त्याग के बाद क्या मेरा अस्तित्व रहेगा अथवा नहीं रहेगा? यदि होगा तो यह अस्तित्व किस रूप में होगा? मेरे संसार में आने का कारण क्या है? मेरे देह

ISSN- 2454-2695
Volume 03 Issue 07
June 2017

त्यागने के बाद क्या होगा? कहाँ जाना होगा? ये सभी जिज्ञासाएं जिज्ञासु के हृदय में निरन्तर घूमती रहती है हम सोचते जरूर है परन्तु अपने को और अपने वास्तविक स्वरूप को जान नहीं पाते है - इन सब प्रश्नों और जिज्ञासाओं का उत्तर सहज ही गीता में मिल जाता है जो गीता रूपी गंगा में डुबकी लगा लेता है - उसे ज्ञान रूपी मोती प्राप्त हो जाते है और गीता में डुबकी लगाने वालों के सभी प्रश्न और जिज्ञासा शांत हो जाया करती हैं। गीता का प्रारम्भ धर्म शब्द से होता है इसी के ऊपर आधरित गीता के अट्ठारहवें अध्याय में इसे धर्म संवाद की संज्ञा दी है - धर्म का अर्थ है - धारण करने वाला धारण करने वाले को आत्मा कहते है और जिसे धारण किया जाता है वह प्रकृति है आत्मा इस संसार का बीज अर्थात् पिता है प्रकृति धारण करने वाली अर्थात् माता है। यही धर्म शब्द का प्रयोग गीता में आत्म स्वभाव एवं जीव स्वभाव के लिए जगह-जगह प्रयुक्त किया गया है। अतः धर्म और अधर्म को समझना इस परिपेक्ष में अत्यन्त आवश्यक है। आत्मा का स्वभाव धर्म है अतः धर्म ही आत्मा है। आत्मा का स्वभाव है पूर्ण शुद्ध ज्ञान, ज्ञान ही आनन्द और शान्ति का अक्षय धाम है। इसके विपरित अधर्म, अज्ञान, अशान्ति, क्लेश का द्योतक है।

श्रीमद्भगवतगीता को सारतत्व के रूप में इस प्रकार (कहा जा सकता है) अभिव्यक्त किया जाता है उदाहरणार्थ - जैसे न्यूटन के पहले भी गुरूत्वाकर्षण का बल कार्य करता था किन्तु न्यूटन ने युगानुकूलशब्दावली देकर इसे विश्व को 'गुरूत्वाकर्षण के नियम' के घोषित सिद्धान्तों से अवगत कराया, जो न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त के रूप में जाना जाता है। ठीक उसी प्रकार श्री कृष्ण भगवान द्वारा गीता में प्रतिपादित तत्व ज्ञान भगवान श्री कृष्ण से पहले भी था – जिसको गीता के उपदेश के माध्यम से उन्होने जन-जन के मानस पटल पर चित्रित कर दिया, उन्होने जो कुछ भी कहा उसमें एक मानव का नहीं अपितु सम्पूर्ण (मनुष्य) मानव जाति का हित सन्निहित है। श्रीमद्भगवतगीता को निहित ज्ञान मानव की बौद्धिकता की उच्चतम अवस्था तो है ही, साथ ही बुद्धि की सीमाओं के परे मानव क्या सोच सकता है? क्या अनुभव कर सकता

ISSN- 2454-2695

Volume 03 Issue 07

June 2017

है – उसकी एक झलक भी हमें दिखा देता है अर्थात् परमार्थ तक हमें पहुँचाने में सहायक है हमारा धार्मिक – ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रन्थ – श्रीमद्भगवतगीता। गीता की महिमा के विषय में निम्न श्लोक दर्शनीय है, यथाः–

“कर्त्तव्यदीक्षांचंसमत्वशिक्षां ज्ञानस्य भिक्षां शरणागतिं च।

ददाति गीता करूणार्द्रभूता कृष्णेन गीता जगतो हिताय।।”